प्राक्कथन

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध 'हिन्दी यात्रा साहित्य और राहुल सांकृत्यायन' उपसंहार को छोड़कर सात अध्यायों में विभाजित है। प्रथम अध्याय में महापण्डित राहुल सांकृत्यायन के व्यक्तित्व एंव कृतीत्व पर प्रकाश डाला गया है। पण्डित राहुल सांकृत्यायन आजमगढ़ के एक ब्राह्मण परिवार में पैदा हुए थे तथा प्रारम्भिक शिक्षा के बाद नियमित शिक्षा प्राप्त करने का अवसर उनको बहुत कम प्राप्त हुआ था परन्तु अपनी प्रतिभा के बल पर उन्होंने अपना विशेष स्थान हिन्दी साहित्य में बना लिया है। राहुल जी की सभी रचनाओं का प्रकाशन अभी नहीं हुआ है फिर भी उनके विपुल साहित्य को देखकर उनकी अभूतपूर्व प्रतिभा का परिचय मिलता है।

शोध-प्रबन्ध के द्वितीय अध्याय में यात्रा वृतान्त की परिभाषा, उद्देश्य, वर्गीकरण पर विचार प्रस्तुत करने के साथ ही संसार के प्रसिद्ध घुमक्कड़ों का संक्षेप में परिचय प्रस्तुत किया गया है। इस अध्याय में मानव जाति और यायावरी वृत्ति पर भी प्रकाश डाला गया है। इसी अध्याय के अन्तर्गत हिन्दी में यात्रा साहित्य के विकास पर भी विवेचन प्रस्तुत किया गया है। अध्याय के अन्त में यात्रावृत्त के भेदों का विवेचन प्रस्तुत है।

तृतीय अध्याय में यात्रा साहित्य तथा हिन्दी की ~~काव्य~~ की समानधर्मी विधाओं का आलोचनात्मक परिचय दिया गया है। चतुर्थ अध्याय में पाश्चात्य यात्रा साहित्य का हिन्दी साहित्य पर प्रभाव दिखलाते हुए हिन्दी के प्रमुख यात्रावृत्त लेखकों की रचनाओं का विवेचन किया गया है।

पंचम् अध्याय में राहुल जी के यात्रा साहित्य पर विस्तृत विवेचन प्रस्तुत किया गया है। विभिन्न देशों की यात्राओं के वर्णन के आधार पर सम्बन्धित देशों की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक परिस्थितियों पर विचार प्रस्तुत किया गया है।

षष्ट अध्याय में राहुल जी के यात्रा साहित्य का मूल्यांकन विषय, भाषा और शैली की दृष्टि से प्रस्तुत किया गया है। सप्तम् अध्याय में राहुल जी के यात्रा साहित्य की संप्रेषणीयता का मूल्यांकन किया गया है। इस अध्याय के अन्तर्गत धार्मिक, सामाजिक, वेशभूषा, ऐतिहासिक, राजनीतिक एंव प्राकृतिक शीर्षकों में राहुल जी के यात्रा साहित्य की संप्रेषणीयता का मूल्यांकन किया गया है। अष्टम् अध्याय में उपसंहार के अन्तर्गत राहुल जी के यात्रा साहित्य का हिन्दी साहित्य में महत्व दर्शाया गया है।

प्रस्तुत शीर्षक पर शोध कार्य करने की प्रेरणा गुरुवर डॉ. द्विजराम यादव, प्राचार्य, श्री गाँधी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मालटारी, आजमगढ़ से प्राप्त हुई थी। पूर्वांचल विश्वविद्यालय की शोध समिति ने उक्त विषय पर कार्य करने की अनुमति देकर मेरे उत्साह को बढ़ाया, फलस्वरूप मैंने इस कार्य को आज इस रूप में प्रस्तुत करने का साहस किया है। शोध कार्य के दौरान बीच-बीच में मैं हतोत्साहित हो जाया करता था परन्तु अपने गुरुजनों

(डॉ. द्विजराम यादव, डॉ. रहमत उल्लाह) की प्रेरणा और प्रोत्साहन से कार्य करने में जुट जाता था। मैं अपने गुरुजनों का हमेशा ऋणी रहूंगा।

शोध कार्य के लिए मुझे राहुल जी की पुस्तकों की आवश्यकता थी। इस आवश्यकता की पूर्ति श्री गाँधी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मालटारी, आजमगढ़ एंव शिबली नेशनल कालेज के पुस्तकालयों से होती रही, फिर भी मुझे पुस्तकों एंव विद्वानों से मिलने लिए, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, विश्व भारती शान्तिनिकेतन, आदि स्थानों पर जाना पड़ा। आजमगढ़ में श्री अमरनाथ द्विवेदी तथा मिस्टर ब्राइवे का मैं विशेष ऋणी हूं जिन्होंने समय-समय पुस्तकें तो दीं ही, अपने अनमोल सुझाव भी दिये। पण्डित राहुल जी के पैतृक गांव कनैला में उनके वशंजों से भी मुझे प्रर्याप्त सहयोग प्राप्त हुआ है। शान्तिनिकेतन में प्रोफेसर डॉ. रामसिंह तोमर जी ने उक्त विषय पर मेरा मार्ग दर्शन करके जो उपकार किया है उससे मैं कभीऊऋण नहीं हो सकता।

इसके अतिरिक्त अनेक विद्वानों की पुस्तकों से भी मैंने सहयोग प्राप्त किया है। अतः ऐसे सभी विद्वानों का मैं आभारी हूं जिनसे मुझे प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से इस शोध कार्य को पूरा करने में सहयोग प्राप्त हुआ है।

राजकुमार भारती

25 दिसम्बर 1993

(राजकुमार भारती)
शोध छात्र
शिबली नेशनल कालेज, आजमगढ़